Core Course CC - 1

Notes

वर्ण विचार :- मिरजु तिर्की के मत अनुसार -

कुँड़ुख भाषा में देवनागरी वर्णों का प्रयोग अच्छा माना गया है क्योंकि देवनागरी लिपि में जैसा हम लिखते हैं, वैसा ही हम पढ़ते हैं। जहाँ तक वर्णमाला की बात है, सामान्यतः देवनागरी लिपि के वर्णमाला का प्रयोग कुँड़ुख में किया जाता है। किन्तु कुछ विशेषताएँ हैं जिन्हें जानना आवश्यक है।

(1) स्वर वर्ण के ऐ और औ वर्णों की जरूरत कुँड़ुख में नहीं होती है।

(2) हिन्दी में ए और ओ का दीर्घ उच्चारण होता है। कुँड़ुख में इन दो वर्णों से अनेक शब्द मिलते हैं। इसलिए ए और ओ वर्ण को कुँड़ुख में ह्रस्व ह्रस्व मान लिया गया है।

उदाहरण :- लिखना - ढूँड़ना, हिलाना - जुकना
धसटिना - नतगना, जगना - एजोरना

ए और ओ को दीर्घ बनाने के लिए चिन्ह का प्रयोग करते हैं। अपोस्ट्रोफी लगाने के समय ए तक के पहले जो चिन्ह का प्रयोग करते हैं परन्तु उसी चिन्ह का प्रयोग ए और ओ के बाद किया जाता है। जैसे-
लिखना - ड़ना, लिखना जरूरी है - ड़ना चाड़ राई।
खाना जरूरी है - ओन्ना चाड़ राई

(3) विसर्ग (:) का प्रयोग कुँड़ुख में बहुत होता है। किन्तु हिन्दी अथवा संस्कृत के विसर्ग के उच्चारण से भिन्न कुँड़ुख में होता है।

कहाँ - एकसान, यहाँ - ईश्या

Notes

4. शब्द के अन्त में अगर हम आकार लगाते हैं तो हिन्दी की तुलना में कम बलाघात करते हैं।

जैसे – हिन्दी	कुँडुख
तोता –	तोता
अंतड़ी –	पोट्टा
हाथी दांत की चूड़ी (गाजा) –	हथी पेठो – पल्लो – हि: बाला

(5) कुँडुख में ष, श, का प्रयोग नहीं होता है केवल स का प्रयोग होता है।

हिन्दी	कुँडुख
शहर –	सहर
दोष –	दोस

इसी प्रकार क्ष, त्र, ज्ञ. का प्रयोग नहीं होता है

हिन्दी	कुँडुख
क्षमा –	छमा
त्रिशूल –	तिरसूल
ज्ञान –	गेयान
ऋषि –	रिसि

(6.) सामान्य प्रयोग में कुँडुख भाषा बोलने वाले महाप्राण का उच्चारण प्रायः नहीं करते हैं, किन्तु विशेष भाव प्रकट करने के लिए महाप्राण का प्रयोग किया जाता है।

पैर से दबाना (रौंदना – खेद़ तुर अरबना

बांधना – ह:ना

लात मारना – लाथना / लथियाना